Gyanshauryam, International Scientific Refereed Research Journal
© 2022 GISRRJ | Volume 5 | Issue 1 | ISSN : 2582-0095
Doi : https://doi.org/10.32628/GISRRJ203334

दलित नारीवाद और रजनी तिलक की कविताएँ

आकाश कुमार
सहायक प्राध्यापक, हिंदी विभाग, दाउदनगर कॉलेज
(मगध विश्वविद्यालय) औरंगाबाद, बिहार।

Article Info
Volume 5, Issue 1
Page Number : 41-45

Publication Issue :
January-February-2022

Article History
Accepted : 01 Feb 2022
Published : 10 Feb 2022

शोध सारांश : यह शोध पत्र दलित नारीवाद के संदर्भ में रजनी तिलक की कविताओं पर केन्द्रित है। रजनी तिलक जी जन्म 27 मई 1958 को दिल्ली में हुआ था और मृत्यु 30 मार्च 2018 को हुई। वे एक दलित नारीवादी कार्यकर्ता होने के साथ साथ एक लेखिका भी थीं। इसलिए उनकी कविताएँ राजनीतिक तेवर वाली कविताएँ हैं जहाँ सीधे सीधे अपनी बातों को उन्होंने रखा है। ये कविताएँ दलित स्त्री के 'स्व' से शुरू होकर 'हम' पर जाती हैं। इन कविताओं में दलित स्त्री के शोषणमात्र को बयां नहीं किया गया है बल्कि उन शोषण के कुचक्रों की समूची संरचना की पड़ताल की गयी है। रजनी तिलक की कविताएँ दलित नारीवाद की अवधारणा को समझने के लिहाज से बहुत महत्त्वपूर्ण हैं। दलित विमर्श और स्त्री विमर्श से अलग दलित स्त्री के विमर्श की जरूरत क्यों पड़ी इसे ये कविताएँ बखूबी बयान करती हैं।

मुख्य शब्द : दलित स्त्री, पितृसत्ता, ब्राह्मणवादी पितृसत्ता, जाति, जेंडर, दलित साहित्य, स्त्रीवादी साहित्य।

कविता में दलित स्त्री और उसके मुद्दों की उपस्थिति हमेशा से नहीं के बराबर रही है। दलित और स्त्रीवादी साहित्य के तहत लिखी जाने वाली कविता भी दलित स्त्री तक ठीक ढंग से नहीं पहुँच पाई। दलित साहित्य जिसपर दलित पुरुषों का ही वर्चस्व रहा उसमें थोड़े बहुत दलित स्त्री के सवाल आये भी तो उनमें पुरुष का दृष्टिकोण हावी था। दलित कविता दलित स्त्री की संवेदना से खुद को जोड़ नहीं पाई। यही हाल स्त्रीवादी कविताओं का भी रहा, दलित स्त्री से दूरी यहाँ भी बनी रही। चूंकि जिस ब्राह्मणवादी पितृसत्ता की बात दलित स्त्रीवाद करता है उससे मुख्यधारा के नारीवाद की लम्बे समय तक दूरी बनी रही और काफी हद तक अभी भी है, इसलिए भी स्त्रीवादी रचनाएँ दलित स्त्री के मुद्दों से अछूती रह गयीं। दलित स्त्री की सामाजिक और शैक्षणिक स्थिति इस स्तर पर रही नहीं कि दलित स्त्रियाँ कविताओं में अपनी बात रख पायें। तेलुगु, मराठी में तो दलित स्त्री लिखती बोलती रही है पर हिंदी में ऐसी स्थितियां कभी बन नहीं पायीं। हाल के कुछ वर्षों में जब कुछ दलित स्त्रियाँ शिक्षा की ओर बढ़ी हैं और दलित नारीवादी सिद्धांतों से उनका साबका हुआ है, हिंदी कविताओं में भी दलित स्त्री की मौजूदगी दिखाई देने लगी है। हिंदी में जो दलित स्त्रियाँ कविता लेखन में सक्रिय हैं उनमें कुछ प्रमुख नाम इस प्रकार हैं : सुशीला टाकभौरे, रजनी तिलक, रजनी अनुरागी, अनीता भारती, हेमलता महिश्वर, कुसुम मेघवाल, पूनम तुषामड़, रजतरानी मीनू, कौशल पंवार, सुमित्रा महरोल आदि हैं।

Copyright: © the author(s), publisher and licensee Technoscience Academy. This is an open-access article distributed under the terms of the Creative Commons Attribution Non-Commercial License, which permits unrestricted non-commercial use, distribution, and reproduction in any medium, provided the original work is properly cited

इन कवयित्रियों की कविताओं में जाति और जेंडर आधारित शोषण के सवाल, ब्राह्मणवादी पितृसत्ता की अलग-अलग रूपों में मौजूदगी, नारीवादी और दलित आंदोलनों में दलित स्त्री का सवाल और उन्हें चुनौती देते हुए दलित नारीवाद की पहचान की जा सकती है। बहुत सी कविताएँ ऐसी हैं जहाँ दलित स्त्री सीधे-सीधे उपस्थित नहीं है लेकिन उसके जीवन को प्रभावित करने वाले सवाल मौजूद हैं। ये कविताएँ भी दलित नारीवाद से जुड़ती हैं। बहुत सी कविताएँ ऐसी हैं जहाँ दलित खुद स्त्री खड़ी है और अपने चारों ओर की दुनिया को प्रश्नाकूलता की दृष्टि से देख रही है। दलित स्त्री का रोजमर्रा का जीवन, अस्तित्व के लिए उसका संघर्ष, घर और बाहर की असुरक्षित स्थितियों में जीवन यापन और इस जीवन को बदलने के लिए उसका चेतनशील होना इन कविताओं का विषय हैं।

रजनी तिलक एक दलित नारीवादी कार्यकर्त्ता और लेखिका हैं। उनके दो काव्य संग्रह 'पदचाप' और 'हवा सी बेचैन युवतियां' प्रकाशित हैं। इनकी कविताओं में दलित नारीवाद का प्रखर स्वरूप देखने को मिलता है। रजनी तिलक शुद्ध रूप से दलित नारीवादी कवयित्री हैं। उनकी कविताओं में दलित स्त्री की पराधीनता, गैर दलित स्त्री से उसकी भिन्नता, स्त्री और दलित आंदोलनों को दलित स्त्री के सम्बन्ध में सवालों के घेरे में लाना आदि मुद्दे देखे जा सकते हैं। अपने कविता संग्रह 'पदचाप' के आत्मकथ्य में वे दलित स्त्री की सर्वाधिक दलित स्थिति बताते हुए लिखती हैं :

"आजादी की स्वर्ण जयंती और मानव-अधिकार की घोषणा के पचास वर्ष बीत जाने पर भी दलित स्त्रियों की हालत में विशेष परिवर्तन नहीं आया है। शिक्षा, राजनीति, प्रशासनिक सेवा, वाणिज्यिक क्षेत्र में उसकी पहुँच नगण्य है। अगर वो कहीं है तो शहर की स्लम, धूल व् बदबूदार, दूर-दराज गाँव-देहातों के बहार बनी बस्तियों में। इन बस्तियों में शौचालय, पीने का पानी, बच्चों को पढ़ाने के लिए प्राथमिक स्कूल, प्राथमिक चिकित्सालय, यहाँ तक कि गाँव को जोड़ने वाली सड़कें तक उपलब्ध नहीं हैं। टेलीफोन, बिजली की बात तो छोड़ दीजिये।"[i]

रजनी तिलक की कविता 'औरत-औरत में अंतर है' दलित स्त्री और सवर्ण स्त्री के बीच के फर्क को रेखांकित करती है। दलित नारीवाद की अवधारणाओं का बिलकुल सटीक काव्यात्मक रूप है यह कविता। वे लिखती हैं :

औरत-औरत होने में
जुदा-जुदा फर्क नहीं तो क्या?
एक भंगी तो दूसरी बामणी
एक डोम तो दूसरी ठकुरानी
दोनों सुबह से शाम खटती हैं
बेशक, एक दिन भर खेत में
दूसरी घर की चारदीवारी में
शाम को एक सोती है बिस्तर पे
तो दूसरी काँटों पर।[ii]

दलित नारीवाद इस बात को बहुत जोर के साथ कहता है कि दलित स्त्री की समस्याएँ वही नहीं हैं जो एक सवर्ण स्त्री की समस्याएँ हैं। इसी मुद्दे पर वह मुख्यधारा के नारीवाद के साथ अपनी असहमति भी व्यक्त करता है और उससे अलग अपनी राह चुनता है। दलित नारीवादी स्त्रियाँ जो पहले नारीवादी संगठनों से जुडी हुई थीं उन्होंने इस बात को महसूस किया कि वहाँ सवर्ण स्त्री के मुद्दों में दलित स्त्री के मुद्दों को तिरोहित कर दिया जा रहा है और दलित स्त्री की अलग पहचान को, जाति आधारित उसकी समस्याओं को नजरअंदाज कर दिया जा रहा है। इसी मुद्दे पर दलित नारीवादी आन्दोलन शुरू होता है और अपनी अलग राह बनाता है। दलित स्त्री घर से बाहर खेतों-खलिहानों, कारखानों में कठोर परिश्रम करती है, कम मेहनताना पाती है, असुरक्षित कार्यक्षेत्र में यौन उत्पीड़न का शिकार बनती है। ये सब समस्याएँ उसे एक सवर्ण स्त्री से अलग करती हैं। ज़ाहिर है अगर समस्याएँ और उन समस्याओं के कारण अलग हैं तो उनको लेकर होने वाले संघर्ष भी अलग होने चाहिए। इसी संघर्ष की बात दलित नारीवाद करता है।

यहाँ महत्वपूर्ण बात यह है कि दलित स्त्री पर बात करते हुए रजनी तिलक सवर्ण स्त्री की मुश्किलों, उसके संघर्षों को नजरअंदाज नहीं करतीं। ऊँची जाति की स्त्रियों को जिस तरह घरों में इज्जत के दायरे के कैद होकर जीना होता है उसे वे रेखांकित करती हैं लेकिन दलित स्त्री के जीवन को उससे ज्यादा मुश्किल पाती हैं। इस कविता में वे और भी कई क्षेत्रों में दलित और सवर्ण स्त्री की तुलना करती हैं और दलित स्त्री को अपेक्षाकृत ज्यादा मुश्किलों में घिरा पाती हैं जहाँ उसके लिए अस्तित्व का प्रश्न भी सम्मान के सम्मान के प्रश्न के साथ जुड़ गया है। कविता के आखिर में वे साफ़-साफ़ लिखती हैं :

औरत नहीं मात्र एक जज्बात
हर समाज का हिस्सा
बनती वह भी जातियों में
धर्म की अनुयायी है
औरत-औरत में अंतर है।[iii]

स्त्रियों के बीच के फर्क को यह कविता जाति की रेखाओं से बना हुआ देखती है और समाज में जाति की निर्णायक भूमिका को भी स्वीकार करती है। इस तरह यह कविता इस बात को सामने रखती है कि अगर स्त्रियों के बीच वास्तविक समानता लानी है तो सबसे पहले जाति का उन्मूलन करना पड़ेगा। ऐसा ही स्वर उनकी कविता 'फर्क' में मौजूद है जो दलित और सवर्ण स्त्री के बीच के फर्क को सामने रखती है। दलित स्त्री के जीवन में जो अपमान, तिरस्कार, अमानवीय जीवन परिस्थितियां और अस्तित्व का संघर्ष मौजूद है उससे सवर्ण स्त्री अनजान है, ऐसे में कोई नारीवादी आन्दोलन सफल नहीं हो सकता अगर वह दो भिन्न समाज की स्त्रियों के बीच के फर्क को नज़रंदाज करता है। यह दावा इस कविता में कवयित्री करती हैं।

रजनी तिलक की कविताएँ स्त्रीवादी और जाति-विरोधी तो हैं ही, बहत सी कविताएँ दलित स्त्री को केंद्र में रखकर लिखी गयी हैं जहाँ दलित स्त्री का जीवन, उसकी बदहाली, उसका संघर्ष मौजूद है। 'अनकही कहानियाँ', 'भंगिन', 'रोटी का मतलब' ऐसी ही कविताएँ हैं। 'अनकही कहानियाँ' दलित स्त्री के समूचे जीवन संघर्ष और उसके साथ होते आये ऐतिहासिक अन्याय की बानगी पेश करती है। यह एक कविता दलित स्त्रीवाद की पूरी अवधारणा को स्पष्ट करने में सक्षम है। जाति, पितृसत्ता, परिवार और राज्य के दलित स्त्री के खिलाफ होना, शिक्षा और सामाजिक जीवन से बहिष्कार, अपमानजनक जीवन, असंगठित क्षेत्रों में असुविधाजनक रोजगार, यौन उत्पीड़न की खुली छूट, पूंजीवादी नीतियों का दुष्प्रभाव सब इस कविता में आया है। इस कविता की कुछ पंक्तियों पर गौर करने की जरूरत है :

भंगिन ढोती है सर पर मैला..
चमारिने करती हैं बेगारी खेतों में,
शहरों में मांजती है बर्तन
ढोती है सिर पर ईंट
समझी जाती है संपत्ति
कहीं भी, कभी भी
उनका बलात्कार करना
अपराध नहीं धर्मशास्त्र में।[iv]

कविता यहाँ दलित स्त्री की स्थिति तो बयां कर ही रही है, ब्राह्मणवादी पितृसत्ता की जड़ों यानि धर्मग्रंथों पर भी सवाल उठाती हैं। ब्राह्मणवादी पितृसत्ता दलित स्त्री को यौन दासी के रूप में दिखाती है। यह कविता इसे साफ लहजों में बयां करती है। इसीलिए अपनी अन्य कविताओं में भी तिलक धर्मग्रंथों को ख़ारिज करती नजर आती हैं। कविता 'शिक्षा का मतलब' में वे स्त्रियों से रामायण, महाभारत, मनुस्मृति पढ़ने की अपील करती हैं पर कुंती, द्रौपदी, या सीता जैसा चरित्र न अपनाने की सलाह देती हैं। वे चाहती हैं कि इन्हें पढ़ते हुए स्त्रियां ब्राह्मणवादी पितृसत्ता के षड्यंत्रों को जाने समझें। 'भंगिन' कविता दलित महिला सफाई कर्मचारी के अमानवीय परिस्थितियों में काम करने को सामने लाती है। इसी तरह कंजर जाति की स्त्री के ऊपर लिखी गयी 'रोटी

का मतलब' कविता इन महिलाओं के अमानवीय पेशे में होने की मुश्किलों को बयां करती हुई सभ्य कहे जाने वाले समाज खुद की सभ्यता पर सोचने पर मजबूर करती है।

रजनी तिलक की कुछ कविताएँ दलित आन्दोलन और नारीवादी आन्दोलन के अंतर्विरोधों को सामने लाती हैं। ये दोनों आन्दोलन दलित स्त्री के सवालों से दूरी बनाते रहे हैं जिन्हें लेकर दलित नारीवाद इनपर प्रश्नचिन्ह लगाता रहा है। 'बलात्कार', 'कहूँ क्या', 'कौन नाच रहा', 'योनि है क्या औरत' ऐसी ही कविताएँ हैं जो दलित स्त्री के सन्दर्भ में नारीवादी आन्दोलन की भूमिका को संदेह के घेरे में रखती हैं। 'बलात्कार' कविता दिल्ली में हुए दामिनी बलात्कार कांड की पृष्ठभूमि में दलित महिलाओं से होने वाले बलात्कार का सवाल उठाती है। हम जानते हैं कि दामिनी बलात्कार काण्ड ने राष्ट्रीय आन्दोलन का रूप ले लिया था जिसमें मीडिया से लेकर सिविल सोसाइटी और स्त्री संगठनों की भूमिका थी। तिलक अपनी इस कविता में दलित स्त्री से होने वाले बलात्कारों की बात करते हुए सवाल उठाती हैं कि क्या ये सारे संस्थान दलित स्त्री से होने वाले बलात्कार के बाद इसी तरह का आन्दोलन खड़ा करेंगे ? मीडिया, सिविल सोसाइटी, स्त्रीवादी संगठन और गैर सरकारी संगठनों में ऊँची जाति का वर्चस्व रहा है जिन्होंने हमेशा दलित स्त्री के साथ होने वाले उत्पीड़न से आँखें चुराई हैं। यह कविता दिल्ली बलात्कार काण्ड के बरक्स उन देश की राजधानी से सुदूर प्रदेशों में अनगिनत दलित महिलाओं के साथ रोज होने वाले सांस्थानिक बलात्कारों को रखती है जिन्हें कभी न्याय नहीं मिल पाता और पूछती है :

मीडिया, सिविल सोसाइटी
क्या खड़े रहो हमारे साथ भी ?
मथुरा, खैरलांजी, भंवरी
दामिनी के बलात्कारियों
को सजा दिलाओगे न ?[v]

तिलक की कविता 'कहूँ क्या' मुख्यधारा के नारीवादी आंदोलनों के भरोसे पर सवाल खड़े करती है। जब दलित नारीवादी आन्दोलनों की शुरुआत हुई तो नारीवादी आन्दोलनों की ओर से इनपर स्त्री एकता को तोड़ने का आरोप लगा। 'सिस्टरहुड' में दरार डालने का आरोप लगा। जबकि दलित नारीवाद इस तरह के सिस्टरहुड को एक मिथ्या अवधारणा मानता है। क्योंकि जब तक जाति के नाम पर स्त्रियाँ बंटी रहेंगी तब तक इस तरह की कोई भी अवधारणा झूठी ही साबत होगी। यह कविता सांसी जाति की एक स्त्री की ओर से लिखी गयी है जिसकी दुनिया शराब बनाने और बेचने में ख़त्म हो जाती है, जिनके नाम जन्मते ही अपराधी की श्रेणी में डाल दिए जाते हैं, जीवन की मूलभूत सुविधाओं से वंचित इस जाति की महिलाओं का बहनापा उच्च जाति की नारीवादी स्त्रियों से हो भी तो कैसे जो जाति के सवाल को दरकिनार कर देती हैं ? इस कविता में यह दलित स्त्री नारीवादी आंदोलनों के इसी पहलू को उजागर करती है :

तुम्हारा बहनापा किस काम का
जिसमें मेरा दुख शामिल नहीं
तुम्हारी स्त्री मुक्ति की लड़ाई किस काम की
जिसमें मेरी लड़ाई शामिल नहीं[vi]

ठीक इसी तरह दलित नारीवाद दलित आन्दोलनों में पितृसत्ता की मौजूदगी का सवाल उठाता है। दलित आंदोलनों ने जाति आधारित भेदभावों पर सीमित रह गए और उन्होंने लैंगिक भेदभावों को अपने आन्दोलन का हिस्सा नहीं बनाया। यह अम्बेडकरवाद से भी दूर भागना था क्योंकि डा. अंबेडकर ने स्त्रियों की पराधीनता के लिए ब्राह्मणवाद को जिम्मेवार माना था। तरह दलित आन्दोलन का ब्राह्मणवाद का विरोध केवल जाति के मसले तक ही सिमट गया। उनके अपने घरों में स्त्रियाँ पितृसत्ता का शिकार रहीं। इसलिए दलित स्त्री के लिए न तो स्त्री आंदोलनों में जगह बनी न ही दलित आंदोलनों में। रजनी तिलक की कविताएँ 'आदिपुरुष' और 'मेरे भाई' दलित आंदोलनों के इसी विरोधाभास को सामने लाती है। 'मेरे भाई' कविता में वे दलित आंदोलकारियों को संबोधित करती हुई पूछती हैं :

तुम मेरे कौमी भाई!
अपनी आज़ादी मांगते हो
बताते और हमें समझाते हो
उसे पूरी कौम की आज़ादी!
कौम की आजादी
क्या औरतों की गुलामी है ?
...हम पूछते हैं तुमसे
स्वाबलंबी बन
कब लड़ोगे हमारे लिए ?[vii]

उनकी कविता 'आदि पुरुष' भी इसी मुद्दे पर लिखी गयी कविता है जिसमें वे दलित साहित्यकारों को उनके अपनी पत्नियों के प्रति पितृसत्तात्मक व्यवहार पर घेरती हैं। यह कविता ऐसे दलित साहित्यकारों को उन्हीं सवर्णों के विचारों को पोषित करने वाला मानती है जिनका वे विरोध करते है। सामाजिक न्याय के मसले पर ये साहित्यकार असफल हैं ऐसा विरोध ये कविता दर्ज करती है।

इसके अलावा रजनी तिलक की अन्य कविताओं में जाति आधारित भेदभाव के खिलाफ आवाज बुलंद करती कविताएँ भी हैं जहाँ जाति व्यवस्था के कारण अस्तित्व में रह रहे दलितों की नारकीय जिंदगी का वर्णन है, समाज के अलग-अलग हिस्सों में जाति की मौजूदगी को लेकर रोष है और इस व्यवस्था के खिलाफ एकजुट होने का आह्वान है। उनकी कविता 'वे बाँट देना चाहते' हैं जाति व्यवस्था की बुनियाद पर चोट करती है। जाति के अस्तित्व में रहने का एक बड़ा कारण यह है कि सारी जातियां आपस में बंटी हुई है। यहाँ तक कि हर निचली जाति भी खुद से नीचे एक जाति खोज लेती है और खुद को उससे श्रेष्ठ मानती हुई इस व्यवस्था को बनाए रखने में सहयोग देती है। यह कविता दलितों के अलग-अलग उपजातियों में बंटे होने को मनुवाद का षड्यंत्र बताती है और इन सबके एक होकर जातिविहीन समाज बनाने का आह्वान करती है। रजनी तिलक की कविताएँ जाति और पितृसत्ता की एक समान आलोचना करती हुई दलित स्त्री की मुक्ति का रास्ता तलाशती हैं। दलित और स्त्रीवादी आन्दोलनों की आलोचना करते हुए वे उनके उन अंतर्विरोधों को सामने लाती हैं जिनका दूर होना जाति और जेंडर आधारित भेदभाव से रहित समाज बनाने के लिए जरूरी है।

सन्दर्भ-

[i]. रजनी तिलक, पदचाप, निधि बुक्स, पटना, 2008, पृ. xi
[ii]. रजनी तिलक, पदचाप, निधि बुक्स, पटना, 2008, पृ. 41
[iii]. रजनी तिलक, 2008, पृ. 42
[iv]. रजनी तिलक, हवा सी बेचैन युवतियां, स्वराज प्रकाशन, नई दिल्ली, 2014, पृ. 57-58
[v]. रजनी तिलक, 2014, पृ. 23
[vi]. वही, पृ. 27
[vii]. रजनी तिलक, 2014, पृ. 31